स्वर्णिम दुनिया की अग्रदूत दादी प्रकाशमणि

विदुषी, सशक्त नारी, परमात्म प्यारी, नारी शक्ति का अनुपम उदाहरण दादीजी की आभा तथा उसका फैलाव आज पूरा विश्व देख रहा है। आज सम्पूर्ण मानव समाज इस बात को दिल खोल के कहता है कि इस करिश्माई व्यक्तित्व से हमने अपनी मंसा को पूरी तरह से बदला है, और हो भी क्यों नहीं, क्योंकि हमारी दादी थीं ही ऐसी, जिन्होंने आध्यात्मिकता की मशाल जन-जन के हृदय में उन अनुभूतियों से जगाया, जिनसे वे खुद ओत-प्रोत थीं। आज उनकी छाप पाँचों महाद्वीपों में उनके चरित्र के गुणगान के रूप में चित्रित हैं। सबके मध्य दादी जी अपने कर्त्तव्यों के माध्यम से आज भी जीवित हैं।

दादी आदेशात्मक नहीं सहयोगात्मक थीं

दादी ने कभी यह नहीं कहा कि मेरे पास समय नहीं है। यज्ञ के नियम, धारणाओं पर पक्की होकर चलती थीं। सारा दिन दादी योगयुक्त अवस्था में रहकर कारोबार में व्यस्त रहती थीं। दादी आदेशात्मक शब्द नहीं बोलती थीं बल्कि सहयोगात्मक शब्दों के आधार से सहयोग देती थीं। जब ओम शांति भवन बन रहा था तो सामने जंगल था, छोटी-छोटी पहाड़ियाँ थीं। जब पत्थर तोड़े जाते थे तो रात में सभी भाई-बहनों को लेकर दादी स्वयं जाती थीं और पत्थर उठाती थीं। हम कहते, दादी बैठ जाओ, पर वे बैठती नहीं थीं, दो-चार पत्थर ज़रूर उठाती थीं। सारी रात हमारे साथ बैठी रहती थीं। करती भी थीं और कराती भी थीं। ओम शांति भवन की एक-एक ईंट में दादी की भावनाएँ समाई हुई हैं। - **ब्र.कु. मोहिनी, अध्यक्षा, ग्राम विकास प्रभाग**

नज़रें दादी की नहीं स्वयं भगवान की

दादी जी के अंग-संग रहने का मुझे परम सौभाग्य मिला। इसके लिए मैं बाबा की आभारी हूँ। दादी जी योग्यताओं की खान थीं। उनके संगत में आकर ही मैं योग्यताओं में पारंगत होती चली गई। जैसे पारस के संग रहकर लोहा भी पारस बन जाता है, ऐसे दादी जी के संग रहकर मैं भी योग्य बन गई। उनके सामीप्य में थकान किसे कहते हैं, मैंने नहीं जाना। मुझे महसूस होता रहा कि ये नज़रें दादी जी की नहीं, स्वयं भगवान की हैं, जो मुझे निहाल कर रही हैं। उनके स्पर्श मात्र से दिव्य शक्ति का मुझमें संचार होता था।

दादी जी ने यज्ञ कारोबार को बहुत ही दृढ़ता और संयम से चलाया। वे क्षमा का सागर थीं, हर गलती को भुला कर प्रेम से आगे बढ़ाती थीं। दादी कहतीं जिसको जो चाहिए वो बाबा के घर से मिलना चाहिए।

- **ब्र.कु. मुन्नी, कार्यक्रम प्रबंधिका, आबू**

एक नज़र में दादी जी की उपाधियाँ ...

- सन् 1954 में द्वितीय धर्म सम्मेलन, जापान में आपने शिरकत की।
- संस्थान द्वारा राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विराट रूप से चल रहे कार्यों को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र द्वारा 1985 में अंतर्राष्ट्रीय 'शान्ति पदक' का सम्मान।
- 1987 में सकारात्मक कार्यों के लिए 'शांति दूत' सम्मान।
- 30 दिसम्बर 1992 को मोहनलाल सुखाड़िया विश्व विद्यालय द्वारा तत्कालिन राज्यपाल डॉ. एम. चेन्नारेड्डी द्वारा डॉक्टरेट की मानद उपाधि से विभूषित।
- सन् 2000 में विश्व धर्म संसद की मनोनित अध्यक्षा।
- वाशिंगटन डी.सी. में दादी जी के प्रखर व्यक्तित्व को देखकर उनकी याद में प्रतिवर्ष 10 जून को प्रकाशमणि दिवस मनाने की उद्घोषणा वहाँ के मेयर द्वारा।
- यूनेस्को द्वारा दादी जी को अंतर्राष्ट्रीय शांति पुरस्कार संस्कृति वर्ष के दौरान पीस मेनिफेस्टो 2000 के अंतर्गत भारत व 120 अन्य देशों से साढ़े तीन करोड़ व्यक्तियों के हस्ताक्षर जुटाने पर विशेष अवॉर्ड से सम्मानित।

दादी ने सभी को एकता के सूत्र में बांधा

दादी जी संगठन के हर सदस्य के गुण व विशेषताओं को ध्यान में रखकर, हरेक के भिन्न-भिन्न विचारों का समन्वय करने पर बल देती थीं। एक-दो के विचारों को सम्मान देने के फलस्वरूप वो संगठन को आपसी स्नेह और एकता के सूत्र में बांध देती थीं। वर्तमान पुरुषोत्तम संगमयुग के अमूल्य समय को व्यर्थ न गंवाकर इसे रचनात्मक कार्यों में लगाने की प्रेरणा दादीजी देती थीं और सदा इस बात का ध्यान रखती थीं कि समय और शक्ति व्यर्थ न जाये, क्योंकि इन शक्तियों के कारण ही संगठन सुचारू रूप से चलता है। दादी जी सर्व आत्माओं की सूक्ष्म आत्मिक शक्ति के विकास के लिए समय प्रति समय अखण्ड योग तपस्या (भट्ठी) के विशेष कार्यक्रम आयोजित करवाती थीं।

- **ब्र.कु. निर्वैर, महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़।**

दादी ने हर पल किया मार्गदर्शन

पुरुष प्रधान समाज में इतनी प्रखर महिला का व्यक्तित्व सराहनीय है। दादी जी परोक्ष तथा अपरोक्ष रूप से सेवा करती थीं जिसको खुद मैंने अपनी आँखों से देखा है। दादी जी के पाँव जहाँ पड़ते थे वहाँ सेवा स्वतः शुरु हो जाती थी। प्रदर्शनी सेवा में सबसे पहले ओपीनियन लिखवाने की शुरुआत दादी जी के द्वारा ही हुई। सन् 1964 से लेकर 1968 तक मैं दादीजी के सानिध्य में रहा तथा उनसे पालना ली। अव्यक्त बापदादा से दादीजी के साथ मुझे भी विदेश जाने का अवसर मिला। मैंने वहाँ दादीजी से माँ-बेटे का स्नेह और मार्गदर्शन प्राप्त किया। बापदादा की श्रीमत के आधार से मुझे यज्ञ सेवार्थ मकान खरीदने और अन्य संस्थाओं का निर्माण करने का सुअवसर दादीजी ने ही दिया।

- **ब्र.कु.रमेश, अति. महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़**

अद्भुत आध्यात्मिक विश्वदूत

दादी जी मधुरता से स्नेह हरा-भरा व्यवहार करती थीं। वह प्रत्येक आत्मा को विशेष एवं योग्य समझ आत्मिक दृष्टि से देखती थीं। मधुबन में कभी भी कोई मेहमान आता था तो उसकी सुख-सुविधा का पूरा ध्यान रखती थीं। उनका सदैव उद्देश्य रहता था कि वह पूर्ण रूप से संतुष्ट होकर जाये। वह यज्ञ के सभी भाई-बहनों की आध्यात्मिक पालना के साथ-साथ शारीरिक रूप से भी स्वस्थ बनाये रखने की पालना करती थीं। वह सदैव स्वयं को आध्यात्मिक परिवार का मुखिया समझ कर सभी के साथ सद्भावना व स्नेह युक्त व्यवहार करती थीं। संस्था की मुख्य प्रशासिका होते भी दादी में ज़रा भी अभिमान नहीं था। वह एक अद्भुत आध्यात्मिक विश्वदूत थीं।

- **ब्र.कु.बृजमोहन, अध्यक्ष राजनैतिक सेवा प्रभाग**

दादी जी ने बाप समान पालना की

कोई भी सेवा हो, निमंत्रण आये, बाबा दादी को ही भेजते थे। पहले-पहले जापान से जब निमंत्रण आया उसमें दादी का पहला पार्ट रहा। बाप समान सबकी पालना, सबके ऊपर ध्यान देना, मधुबन में आने वालों के लिए ठीक प्रबंध करना, ये सब दादी खुद करती थीं। रात्रि में पार्टी वाले जब विश्राम करते तो बाबा दादी और मुझे भेजते कि जाकर देखो कि पार्टी वाले सभी ठीक-ठाक से सोए हैं। दादी को देखने का, उनके साथ रहने का तथा उनके साथ सहयोगी बनने का पार्ट हमारा रहा। दादी जी बच्चों को ऐसी पालना देती थीं कि माँ-बाप, लौकिक संबंधी, मित्रों आदि की याद भी न आये।

- **दादी रतनमोहिनी, संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़**

24 अक्टूबर, 1986: यू.एन.ओ. महासचिव ज़ेवियर पेरिज से शांति पुरस्कार प्राप्त करते हुए दादी।

सबको प्रेरणा मिलती थी उनके जैसा बनने की

जब ओम निवास बना उस समय मैं 7 वर्ष की थी। बाबा ने कहा कि इन पवित्र पौधों को सम्भालने के निमित्त केवल पवित्र कन्याएँ होंगी। तो पाँच कन्याओं को दादी प्रकाशमणि, दादी चन्द्रमणि, दादी शान्तामणि, मिट्ठू दादी और एक बहन को निमित्त बनाया। बड़ी दादी ने चौदह वर्ष की आयु में ही माँ की तरह, शिक्षिका की तरह बेहद स्नेह से पालना की। सदा बाबा के डायरेक्शन अनुसार ही बड़ी दादी हर कार्य और सेवा इतने दिल से करती थीं कि सबको प्रेरणा मिलती थी उनके जैसा बनने की। दादी सदा ही अचानक फोन करती थी, कमलमणि, दादी तुम्हारे पास अभी आ रही है और बहुत हक से, प्यार से दादी यहाँ आते थे और नई-नई प्रेरणाएँ देते थे। - **दादी कमलमणि, दिल्ली**

निर्भयता से लेती थीं निर्णय

सत्यता व पवित्रता की शक्ति होने के कारण उनमें निर्णय शक्ति बहुत प्रबल थी। निर्भयता से निर्णय लेती थीं। उन्हें किसी बात का डर नहीं होता था। वे सभी को समान दृष्टि से देखती थीं, उनमें पक्षपात की भावना नहीं थी। जो सत्य बात होती थी उसे वे कह देती थीं। सामने वाला चाहे कितना भी बड़ा व्यक्ति हो, चाहे वो कोई संत हो, महामण्डलेश्वर हो, राष्ट्रपति हो या प्रधानमंत्री हो, लेकिन दादी ऐसे बात करती थी जैसे वो उनकी छोटी बहन हैं, एकदम दादीजी निर्मानता व निरहंकारिता की मूरत दिखाई देती थीं। इसलिए जो भी उनके सामने आता था वो उनके निर्मल व निश्छल स्वभाव से प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता था।

- **ब्र.कु. संतोष, अध्यक्षा, समाज सेवा प्रभाग**

दादी की निर्णय शक्ति प्रखर थी

दादी किसी भी नये विचार को बड़े स्तर पर अपनाने से पहले छोटे स्तर पर जाँचती थीं कि ये कार्य उचित परिणाम देगा या नहीं। वे केवल एक अच्छी प्रशासिका ही नहीं थीं बल्कि उनके भाषणों में चमत्कारिक शक्ति थी। देश-विदेश में उनके भ्रमण ने सभी को ब्रह्माकुमारीज़ की शिक्षाओं को जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी तथा वी.आई.पीज़ को संस्था से जुड़ने में बहुत सहायता की। अनेकों ने अपने जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए दादी जी के निर्देशन का लाभ उठाया। दादीजी ने इस ईश्वरीय यज्ञ की सेवाओं को परमात्म शक्ति की मदद से सारे विश्व में फैलाया। दादीजी में निर्णय की शक्ति बहुत प्रखर थी। वे महत्वपूर्ण निर्णय लेने में देर नहीं करती थीं, बल्कि उसे तुरंत मूर्त रूप देती थीं। - **ब्र.कु. डॉ. निर्मला, निदेशिका, ज्ञानसरोवर**

विरोधी को भी सहयोगी बना देतीं

दादीजी की निःस्वार्थी, निश्छल, निर्मल व पवित्र भावनाएं सहज ही सर्व को प्रभावित करती थीं। वे अपनी निर्मलता से सहज ही विरोधी को भी बाबा का सहयोगी बना देती थीं। एक संत जो ब्रह्माकुमारी बहनों का काफी विरोध करते थे, उन्हें कहीं भी देखते तो मुँह फेर लेते थे, दादी जी ने मधुबन में एक विशाल संत सम्मेलन में उन्हें भी आमंत्रित किया। दादीजी के तप व उनकी महानता का अनुभव करते ही वह दादीजी के समक्ष नतमस्तक हो गया। उसने भरी सभा में कहा कि क्या दादी मुझे अपने छोटे भाई के रूप में स्वीकार करेंगी। दादी ने सभा में उन्हें राखी बांधी। उनका अनुभव सुनकर पढ़कर आज भी हमें आगे बढ़ने की और उनके जैसा बनने की प्रेरणा मिलती है।- **ब्र.कु. आशा, निदेशिका, ओ.आर.सी.**

दादी का जीवन ही संदेश

दादी का जीवन ही एक खुली किताब है। जिनके जीवन का एक-एक पन्ना पलटने से ही उमंग-उत्साह और साहस का स्वीच ऑन हो जाता है। कथनी और करनी को एक समान बनाकर दादी जी ने जीवन को, हर प्रश्न का उत्तर देने वाली डिक्शनरी बनाया। दादीजी सादगी और सवच्छता की श्रृंगारी हुई प्रतिमूर्ति थीं। जीवन को त्याग और तपस्या से भरपूर कर ऐसा लाइट, माइट हाऊस बनाया जिससे चारो ओर प्रकाश ही प्रकाश बिखरने लगा। उसी प्रकाश से आज यह विश्व विद्यालय प्रकाशित हो रहा है। उनके नयनों में रुहानियत, वाणी में मधुरता, कर्मों में कुशलता थी। दादीजी की एक-एक करनी से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। आज भी उनका व्यक्तित्व हमारे लिए प्रेरणास्रोत है।

- **ब्र.कु. राज, क्षेत्रीय निदेशिका, काठमाण्डू**

बाबा के संदेश वाहक के रूप में दादी

मीडिया वाले जब व्यक्तिगत रूप से या कॉन्फ्रेन्स में आते थे तो दादी सबसे मिलती थी और आध्यात्मिक ज्ञान के बारे में उमंग-उत्साह दिलाती थी। ईश्वरीय सेवाओं को बढ़ते हुए देख दादी जी की शुभ इच्छा थी कि ईश्वरीय सेवाओं के समाचार से सभी लोग अवगत हों। उसी सम्बन्ध में सेवा समाचार जन-जन तक पहुँचाने हेतु 'ओमशान्ति मीडिया' पाक्षिक पत्रिका निकालने का निर्णय 1999 में लिया गया। जो आज उनके संकल्प का साकार रूप बखूबी निभा रहा है। दादी जी का उमंग सदा रहता था कि बाबा का संदेश सारे विश्व में पहुँचे। उसके लिए उन्होंने विश्व भर से 10,000 मीडिया वालों को बुलाने का संकल्प व्यक्त किया। उनके संकल्प से ही 'पीस ऑफ माइंड' चैनल उपलब्ध हुआ था।

- **ब्र.कु. करुणा, अध्यक्ष, मीडिया विंग**

दादी ने कहा हिम्मत करो, प्रयत्न करो

एक बार की बात है, जब दादी बैंगलूरु आईं तो उन्होंने कहा कि विधानसभा के बैक्वेट हॉल में हमारा कार्यक्रम होना चाहिए। उन दिनों वह हॉल किसी भी गैर सरकारी संस्था को नहीं दिया जाता था तो हमने दादी से कहा कि वे प्राइवेट संस्थाओं को वह हॉल नहीं देते। दादी ने कहा कि आप हिम्मत करो, प्रयत्न करो, बाबा बैठा है। सच में बच्चों का एक कदम और बाबा के हज़ार कदम। ऐसे कहकर हम सब भाई-बहनों में उन्होंने उमंग भरा और हम सबने मिलकर ऐसा ही किया। मुख्यमंत्री और संबंधित अधिकारियों से मिलकर वह हॉल ले लिया और कार्यक्रम बहुत सफल रहा। इस सम्मेलन की सफलता का श्रेय आदरणीय दादीजी को जाता है।

- **ब्र.कु. मृत्युंजय, उपाध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग**